Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **02.01.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

यदि हमने अपने सालों की ख़ुशियों को वास्तविक रंग में मनाना है तो इन बातों को सामने रखने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से आशा करते हैं कि हम नेकियों की गहराई में जाकर, उन्हें समझ कर, उनके अनुसार काम करें तथा बुराइयों से अपने आपको इस प्रकार बचाएं कि जैसे एक हिंसक पशु को देखकर इंसान स्वंय को बचाने का प्रयास करता है।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज का जुम्अः इस नए साल 2015 का पहला जुम्अः है। मुझे विभिन्न लोगों के नव वर्ष के मुबारकबाद के सन्देश आ रहे हैं। फ़ैक्स भी ज़बानी भी लोग कहते हैं। आप सबको भी यह नव वर्ष हर प्रकार से मुबारक हो परन्तु साथ ही मैं यह भी कहूंगा कि एक दूसरे को बधाई देने का लाभ हमें तभी प्राप्त होगा जब हम अपना स्वंय निरीक्षण करें कि पिछले साल में हमने अपने अहमदी होने के हक़ को कितना अदा किया है तथा आगे के लिए हम इस हक़ को अदा करने के लिए कितना प्रयास करेंगे। अतः हमें इस जुम्अः से आगे के लिए ऐसे इरादे क़ायम करने चाहिएं जो नए साल में हमारे लिए इस हक़ की अदायगी के लिए चुस्ती और परिश्रम का सामान पैदा करते रहें। यह तो ज़ाहिर है कि एक अहमदी होने के कारण हमारे ज़िम्मे जो काम लगाया गया है उसका हक़ नेकी के काम करने से ही अदा होगा। परन्तु इन नेकियों के स्तर क्या होने चाहिएं? तो स्पष्ट रहे कि हर उस व्यक्ति के लिए जो अहमदियत में दाख़िल होता है तथा अहमदी है ये स्तर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वंय व्यवस्थित फ़रमा दिए और अब तो नए संसाधनों तथा नई तकनीक के द्वारा हर व्यक्ति कम से कम एक वर्ष में एक बार ख़लीफ़-ए-वक़्त के हाथ पर यह प्रतिज्ञा करता है कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बयान फ़रमूदा स्तरों को प्राप्त करने के लिए भरसक प्रयास करेगा तथा एक अहमदी के लिए ये स्तर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बैअत की शर्तों में खोल कर बयान फ़रमा दिए हैं। कहने को तो ये दस बैअत की शर्तें हैं लेकिन इनमें एक अहमदी होने के कारण जो दायित्व हैं उनकी संज़्या मोटे तौर पर भी लें तो तीस से अधिक बनती है।

अतः यदि हमने अपने सालों की ख़ुशियों को वास्तविक रंग में मनाना है तो इन बातों को सामने रखने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से आशा करते हैं कि हम नेकियों की गहराई में जाकर उन्हें समझ कर उनके अनुसार काम करें तथा बुराइयों से अपने आपको इस प्रकार बचाएं कि जैसे एक हिंसक पशु को देखकर इंसान स्वंय को बचाने का प्रयास करता है। और जब यह काम होगा तो तब हम न केवल अपनी स्थितियों में इंक़लाब लाने वाले होंगे बल्कि दुनिया को बदलने तथा ख़ुदा तआला के निकट लाने का माध्यम भी बन सकेंगे। अतः इन बातों का थोड़ा सा विवरण याद दिलाने के लिए आज मैं बयान करूंगा। यह याद दिलाना अति आवश्यक है। हमारी बैअत का उद्देश्य हमारे सामने आते रहना चाहिए। पहली बात जो आपने हमें बयान फ़रमाई है वह यह है कि शिर्क से बचने का एहद है। एक मोमिन जो ख़ुदा पर ईमान लाने वाला हो तथा ख़ुदा पर ईमान के कारण ही ख़ुदा तआला के आज्ञा पालन में ज़माने के इमाम की बैअत कर रहा हो, ऐसे व्यक्ति का, तथा शिर्क का तो दूर का भी सम्बंध नहीं हो सकता। यह किस प्रकार सम्भव है कि एक शिर्क करने वाला अल्लाह तआला की बात माने। परन्तु नहीं, जिस सूक्ष्म शिर्क की ओर हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ध्यान दिला रहे हैं वह कोई प्रत्यक्ष शिर्क नहीं बल्कि गुप्त शिर्क है जो एक मोमिन के ईमान को दुर्बल बना देता है। इसकी व्याज़्या करते हुए एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

तौहीद केवल इस बात का नाम नहीं कि मुंह से ला इलाहा इलल्लाह कहें तथा दिल में हज़ारों बुत जमा हों अपितु जो व्यक्ति अपने किसी काम तथा धोके व चाल को ख़ुदा जैसी महानता देता है अथवा किसी मनुष्य पर भरोसा करता है जो ख़ुदा पर रखना चाहिए अथवा अपने आपको वह महत्व देता है जो ख़ुदा तआला को देना चाहिए। इन सब दशाओं में वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में बुतों का उपासक है। बुत केवल वही नहीं हैं जो सोने, चाँदी, पीतल अथवा पत्थर आदि से बनाए जाते हैं तथा उनपर भरोसा किया जाता है बल्कि हर एक चीज़ या कथन या काम जिसको वह सज्जान दिया जाए जो ख़ुदा तआला का हक़ है, वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में बुत है। अतः आज हमें आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है कि पिछले साल में हमने इन योजनाओं तथा साधनों पर भरोसा किया, इन्हीं को सब कुछ समझा अथवा ये चीज़ें हमने योजना के रूप में प्रयोग कीं? तथा ख़ुदा तआला के समक्ष झुक कर इन योजनाओं में अल्लाह तआला की

ओर से ख़ैर और बरकत चाही। अपने आप का न्याय की दृष्टि से निरीक्षण, स्वंय हमें अपने एहद की सत्यता बता देगा।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने हम से यह प्रतिज्ञा ली कि झूठ नहीं बोलूंगा। फ़रमाते हैं कि झूठ भी एक बुत है जिस पर भरोसा करने वाला ख़ुदा पर भरोसा छोड़ देता है। अतः बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से आत्म मंथन की आवश्यकता है। फिर फ़रमया- यह एहद करो कि व्यभिचार से बचोगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि व्यभिचार के निकट मत जाओ। अर्थात ऐसी संगति से दूर रहो जिनके कारण यह विचार में मन में आ सकता हो। तथा उन रास्तों को मत अपनाओ जिनके कारण इन पापों के होने की सम्भावना हो। अब आजकल टी वी है, इन्टर नैट है, उस पर इतनी अशलील फ़िल्में चलती हैं या खोलने से दिखाई दे जाती हैं जो नज़र का भी व्यभिचार है तथा विचारों का भी व्यभिचार है फिर बुराइयों में पड़ने का कारण भी हैं, घरों के टूटने का कारण है। अतः इस विषय में भी कड़ा निरीक्षण करने की आवश्यकता है।

फिर एक एहद हम से यह लिया कि बद-नज़री से बचूंगा। इस लिए ख़ुदा तआला ने क़ुरआन करीम ने ग़ज़्ज़े बसर (नज़रें नीची रखने) का आदेश दिया ताकि बद-नज़री का अवसर ही न मिले। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आग उस आँख पर हराम है जो अल्लाह तआला की वर्जित चीज़ों को देखने के बजाए झुक जाती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का हमें आदेश है कि ना-महरम (वर्जित) महिलाओं को तथा उनके सौन्दर्य के स्थान को कदापि न देखें। फ़रमाते हैं- अवश्य है कि बै-क़ैदी की दृष्टि के कारण किसी समय ठोकरें पेश आवें। अतः चूंकि ख़ुदा तआला चाहता है कि हमारी आँखें तथा मन, सब पवित्र रहें इस लिए उसने यह उच्च शिक्षा दी। फिर आपने हम से यह एहद लिया कि हर एक घोर पाप से बचूंगा। अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना, घोर पाप है। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि गाली गलोच करना घोर पाप है।

फिर एक एहद यह लिया गया बैअत करने वालों से कि अत्याचार नहीं करेगा। अत्याचार करना एक बड़ा घोर पाप है, किसी का अधिकार अवैध रूप से दबाना बड़ा अत्याचार है। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम से जब पूछा गया कि कौनसा अत्याचार सबसे बड़ा है तो आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- सबसे बड़ा अत्याचार यह है कि कोई व्यक्ति अपने भाई के अधिकार में से एक हाथ ज़मीन दबा ले। अतः बड़े भय का अवसर है, वे लोग जो मुक़दमों में अपने अभिमान के कारण अथवा व्यक्तिगत स्वार्थ को प्राप्त करने के कारण लोगों के अधिकारों का हनन करते हैं, उनको सोचना चाहिए। फिर एक एहद हम से यह लिया गया है कि विश्वासघात नहीं करेंगे तथा विश्वासघात न करने का मापदंड आप सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या पेश फ़रमाया? फ़रमाया- उस व्यक्ति से भी विश्वासघात से पेश न आओ जो तुमसे बे-इमानी से पेश आ चुका है। इस प्रकार ये स्तर हैं जो हमें प्राप्त करने हैं।

फिर यह एहद है कि हर श्रेणी के उपद्रव से बचूंगा। अपनों के साथ झगड़ों एंव फ़सादों का तो सवाल ही पैदा नहीं होता, ग़ैरों से, जो हमें कष्ट दे रहे हैं, उनके साथ भी व्यवहार में, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें शिक्षा दी है, वह क्या है? फ़रमाया- वे लोग जो केवल इस कारण तुम्हें छोड़ते हैं तथा तुम से अलग होते हैं कि तुमने ख़ुदा तआला द्वारा स्थापित सिसिले में प्रवेश ले लिया है, उनके साथ दंगा या फ़साद मत करो बल्कि उनके लिए अप्रत्यक्ष दुआ करो। फ़रमाया- देखो मैं इस बात के लिए आया हूँ कि तुम्हें बार बार उपदेश दूँ कि हर प्रकार के फ़साद तथा हंगामों के अवसरों से बचते रहो तथा गालियां सुनकर भी संतोष दिखाओ, बुराई का बदला नेकी से दो।

फिर एक एहद हम से यह लिया कि बग़ावत (अवज्ञा) के चलन से बचता रहूंगा। ये अवज्ञा का मार्ग चाहे जमाअत के निज़ाम के किसी छोटे से कारकुन के विरुद्ध है अथवा सरकार के। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस प्रकार की बातों से बचने का भी आदेश दिया है जिनसे बग़ावत की दुर्गन्ध आती हो। फिर लड़ाई, झगड़े, दंगा, फ़साद भी इस कारण होते हैं कि मनुष्य अहंवाद से बाधित होता है। अतः छोटी से छोटी बात भी जो किसी भी अहंवाद को उभारने वाली अथवा उनके आधीन करने वाली हो, उनसे बचने का भरसक प्रयास करना एक अहमदी का कर्तव्य है।

फिर फ़रमाया कि अहमदियत में दाख़िल होकर तुमने अल्लाह तआला के उस आदेश की भी पाबन्दी करनी है कि नमाज़ों को पाँच समय, उनकी समस्त शर्तों सहित अदा करना है, इस बात का भी एहद करो। दस वर्ष के बच्चे के लिए भी नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है। अतः माता-पिता को इसकी निगरानी आवश्यक है तथा इस निगरानी का हक़ तभी अदा होगा जब माता-पिता स्वंय नमाज़ों में उदाहरण होंगे। यदि इसके अनुसार काम आरम्भ हो जाए तो हमारी मस्जिदें नमाज़ियों से भर जाएं। केवल ओहदेदार ही इसके अनुसार कार्य आरम्भ कर दें तो बड़ा बदलाओ आ सकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति नमाज़ से ही वंचित रहना चाहता है उसने पशुओं से बढ़कर क्या किया? फिर उसमें तथा पशुओं में कोई अन्तर नहीं। अतः इस विषय में हर एक अहमदी को अत्यधिक प्रयास की आवश्यकता है।

फिर यह एहद हम से लिया कि तहज्जुद की नमाज़ की भी व्यवस्था करेंगे। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हें तहज्जुद की नमाज़ की व्यवस्था करनी चाहिए क्यूंकि यह पिछले नेक लोगों का तरीक़ रहा है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सम्भतः यह है कि तुम्हें तहज्जुद की नमाज़ की व्यवस्था करनी चाहिए क्यूंकि यह पिछले नेक लोगों का तरीक़ रहा है

तथा अल्लाह की निकटता प्राप्ति का साधन है। यह आदत पापों से रोकती है तथा बुराइयों को नष्ट करती है और शारीरिक रोगों से बचाती है। इस प्रकार न केवल रूहानी उपचार है अपितु शारीरिक भी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारी जमाअत को चाहिए कि वह तहज्जुद की नमाज़ को अनिवार्य कर ले। जो अधिक नहीं तो दो ही रकात पढ़ ले क्यूंकि उसको दुआ करने का अवसर मिल जाएगा, उस समय की दुआओं में एक विशेष प्रभाव होता है।

अतः इसकी ओर भी हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। फिर आप ने आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने का हम से एहद लिया। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं- जिस व्यक्ति ने मुझ पर दरूद पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस गुना रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा। अतः दरूद का बड़ा महत्व है तथा दुआओं की क़बूलियत के लिए भी दरूद अति आवश्यक है। फिर बैअत में एक एहद हम यह करते हैं कि इस्तिग़फ़ार में निरंतरता लाएंगे। एक कथन में आता है कि आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- जो व्यक्ति इस्तिग़फ़ार से चिमटा रहता है अर्थात अत्यधिक इस्तिग़फ़ार करता है अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से निकलने का मार्ग बना देता है तथा उसकी हर एक कठिनाई से उसके लिए सरलता का मार्ग उत्पन्न कर देता है तथा उन मार्गों से रिज़्क़ प्रदान करता है जिनके विषय में वह सोच भी नहीं सकता। फिर यह एहद है कि मैं अल्लाह तआला की स्तुति करता रहूंगा। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि- हर आवश्यक कार्य यदि अल्लाह तआला की स्तुति के बिना आरम्भ किया जाए तो वह बरकत से वंचित तथा प्रभाव रहित होता है। फिर एक एहद हम ने यह किया है कि अल्लाह तआला साधारण प्राणियों को कष्ट नहीं देंगे। फिर यह एहद है कि मुसलमानों को विशेष रूप से अपने अभिमान के जोशों से कष्ट नहीं देंगे। जिस सीमा तक क्षमा का सलूक हो सकता है, करना है। जो सुधार भी करना है ओहदेदार ने करना है, हर एक का काम नहीं कि सुधार करता फिरे। स्वंय किसी से बदले नहीं लेने, विनम्रता तथा शालीनता को अपना चलन बनाना है।

फिर यह एहद है कि हर परिस्थिति में ख़ुदा तआला का आज्ञा कारी रहना है। सुख और दुःख, हर हाल में ख़ुदा तआला का दामन ही पकड़े रहना है। उसका यह कर्म भी उसके लिए ख़ैर व बरकत का कारण बन जाता है क्यूंकि वह संतोष के लाभ को प्राप्त करता है। अतः हर दशा में अल्लाह तआला की ओर ही दौड़ना एक मोमिन का काम है और जब यह होगा तो इस एहद को भी हम पूरा करने वाले होंगे कि हम अल्लाह तआला की राह में हर अपमान तथा दुःख को स्वीकार करने के लिए तैय्यार हैं और कभी किसी कठिनाई के आने पर मुंह नहीं फेरेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो मेरे हैं, मुझ से जुदा नहीं हो सकते। न कठिनाइयों के कारण, न लागों के अपमान के कारण, न आसमानी परिक्षाओं एंव कठिनाइयों के कारण। अतः हम ने अल्लाह तआला के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बन कर रहना है तथा इसके लिए प्रयास करना है, इन्शाअल्लाह। और दुःख व अपमान भी दिए जाएं तो भी इसकी परवाह नहीं करनी, यह हमारा एहद है। फिर यह एहद है कि रीति रिवाजों के पीछे नहीं चलेंगे। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति दीन के सम्बंध में कोई ऐसी चलन पैदा करता है जिसका दीन के साथ कोई सम्बंध नहीं तो वह रिवाज तिरस्कृत तथा अस्वीकृत है। अतः इसके विषय में हर समय हमें बड़ा सावधान रहना चाहिए। आजकल शादी बयाह के सम्बंध में ग़लत प्रकार के रीति रिवाज पैदा हो गए हैं, अहमदियों को इनसे बचना चाहिए। अपने दाएं बाएं देखकर, अन्य लोगों को देखकर इन रस्मों में नहीं पड़ना चाहिए। इस विषय में विस्तार पूर्वक एक बार मैं बता चुका हूँ। सैक्रेट्रियान तरबियत तथा लजना को चाहिए कि वे समय समय पर ये बातें जमाअत के सामने रखते रहें ताकि अस्वीकृत बातों से जमाअत के लोग बचते रहें।

फिर यह एहद है कि हवा-ए-नफ़्स (उत्कंठा) के पीछे नहीं चलूंगा कभी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो कोई अपने रब के आगे खड़ा होने से डरता है तथा अपनी स्वार्थी इच्छाओं को रोकता है तो जन्नत उसका स्थान है। लालसा को रोकना यही अल्लाह के लिए फ़ना होना है और इसके द्वारा इंसान ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करके इस जहान में जन्नत के स्थान की प्राप्ति कर सकता है। फिर यह एहद है कि अल्लाह तआला और उसके रसूल के हर आदेश को अपने लिए प्रकाश स्तंभ हम बनाएंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हमारा केवल एक ही रसूल है तथा केवल एक ही क़ुरआन शरीफ़ उस पर अवतरित हुआ है जिसके आज्ञा पालन से हम ख़ुदा को पा सकते हैं। अतः इस नियम के लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

फिर यह एहद है कि हर घमंड तथा अहंकार को पूर्णत्या छोड़ देंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं सच सच कहता हूँ कि क़यामत के दिन शिर्क के बाद घमंड जैसी और कोई बला नहीं। यह एक ऐसी बला है जो दोनों जहानों में इंसानों को अपमानित करती है। अतः बड़े भय का अवसर है। फिर फ़रमाया- मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि घमंड से बचो क्यूंकि घमंड हमारे ख़ुदाए जुलजलाल की आँखों में बड़ा घृणित है। फिर यह एहद लिया गया है कि विनयता एंव विनम्रता धारण करूंगा। आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने अल्लाह तआला के लिए विनयता एंव विनम्रता धारण की अल्लाह तआला उसका एक दर्जा रफ़ा (ऊँचा) करेगा, उसको बुलन्द कर देगा और यहां तक कि उसको इल्लियीन में स्थान देगा। विनयता एंव विनम्रता धारण करने से एक दर्जा बुलन्द होता जाएगा, यहां तक बुलन्द होता जाएगा, यदि यह निरन्तर रहे तो जन्नतों के उच्च स्तरीय स्थान जो हैं

उनमें स्थान दे देगा। फिर यह एहद है कि हम सदैव सदाचार का मार्ग अपनाएंगे। इसको भी हर एक को सामने रखना चाहिए। फिर यह एहद है कि हलीमी और मिस्कीनी से अपना जीवन यापन करेंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- यदि अल्लाह तआला को तलाश करना है तो मिस्कीनों के दिल के पास तलाश करो। फिर यह एहद लिया कि दीन और दीन की प्रतिष्ठा तथा इसलाम के प्रति सहानुभूति को अपनी जान, माल, इज़्ज़त, आदर से बढ़कर प्रेम करूंगा।

फिर यह एहद लिया कि अल्लाह तआला के लिए अल्लाह तआला के बन्दों से सदा सहानुभूति करूंगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि याद रखो अल्लाह तआला नेकी को बड़ा पसन्द करता है और वह चाहता है कि उसके प्राणियों से सहानुभूति की जाए। अतः तुम जो मेरे साथ सम्बंध रखते हो याद रखो कि तुम में से हर व्यक्ति से, चाहे वह किसी धर्म का हो, सहानुभूति करो और बिना भेद भाव हर एक के साथ नेकी करो क्यूंकि यही क़ुरआन करीम की शिक्षा है।

फिर यह एहद लिया कि ख़ुदा की दी हुई शक्तियों के द्वारा मानव जाति की सेवा करूंगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- जितनी प्राणियों की आवश्यकताएं हैं तथा जितनी विभिन्न राहों तथा मार्गों से ख़ुदा तआला ने कुछ को कुछ का आधीन कर रखा है इन सारे सम्बंधों में केवल अल्लाह के लिए अपनी वास्तविक तथा स्वार्थ हीन और सच्ची सहानूभूति से जो सम्भव हो सकती है उनको लाभ पहुंचावे और हर एक सहायता के मोहताज को अपनी ख़ुदा की दी हुई शक्ति से मदद दे और उनकी दुनिया व आख़िरत के सुधार के लिए ज़ोर लगावे।

फिर यह एहद आपने लिया कि आप के साथ एक ऐसा निकट सम्बंध अल्लाह तआला के लिए हम ने स्थापित करना है जिसमें आज्ञा पालन का वह स्तर हो जो न किसी सम्बंध में पाया जाता है न सेवा की स्थिति में पाया जाता है। उन समस्त बातों का आज्ञा पालन करना है जो आप हमारी दीनी, इलमी, रूहानी तथा कर्म के सुधार के सम्बंध में आप फ़रमा गए हैं अथवा आपके बाद ख़िलाफ़ते अहमदिया के द्वारा जमाअत के लोगों तक वे पहुंचती हैं जो शरीअत की स्थापना हेतु हैं जो क़ुरआन करीम तथा आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथनों एंव सुन्दर आचरण के अनुसार हैं कि इसके बिना न ही हमारी प्रगति हो सकती है न हमारी इकाई स्थापित रह सकती है। अतः हमें ये निरीक्षण करने की आवश्यकता है कि पिछले वर्ष में हमने अपने एहद को किस सीमा तक निभाया और यदि कमियां हैं तो इस वर्ष हम ने किस प्रकार पूरा करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि- हमारी जमाअत में वही शामिल होता है जो हमारी शिक्षा को अपनी दिन चर्या बनाता है और अपनी हिम्मत और कोशिश के अनुसार इस पर अमल करता है।

नमाज़ों के बाद हुज़ूर अनवर ने दो जनाज़े ग़ायब पढ़ाए। एक तो हमारे शहीद भाई का जनाज़ा है मुकर्रम लुक़मान शहज़ाद साहब पुत्र मुकर्रम अल्लाह दित्ता साहब। आप भड़ी शाह रहमान, ज़िला गूजरां वाला को अहमदियत के विरोधियों ने दिनांक 27 दिसम्बर को सवेरे फ़जर की नमाज़ के बाद फ़ाइरिंग करके शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। शहीद मरहूम ने 27 नवम्बर 2007 को बैअत करके जमाअत के निज़ाम में शमूलियत धारण की थी। 27 दिसम्बर को जब आप फ़जर की नमाज़ अदा करके अपने डेरे पर जा रहे थे तो विरोधियों ने पीछा करके पीछे से सिर में गोली मारी जिसके कारण आप बड़े जख़्मी हो गए। अस्पताल ले जाया जा रहा था कि रास्ते में शहादत का जाम पी लिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम 05 अप्रैल 1989 को पैदा हुए। बड़े ईमानदार, नेक दिल, नेक सीरत, शालीन, मिलने जुलने वाले व्यक्तित्व के मालिक थे। अल्लाह तआला शहीद के दजे बुलन्द फ़रमाए तथा जन्नतुल फ़िरदौस में उच्च स्थान अता फ़रमाए। उनके परिवार को भी अहमदियत के नूर से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ दे।

दूसरा जनाज़ा ग़ायब मुकर्रमा शहज़ादे सतानूस का है। ये मक़दूनिया की रहने वाली हैं। 19 नवम्बर 2014 को 49 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। 1996 में अपने मियां के अहमदियत क़बूल करने के कुछ महीनों बाद बैअत करने का इनको सौभागय प्राप्त हुआ था। अल्लाह तआला मरहूमा की दर्जे बुलन्द करे, मग़फ़िरत का सलूक फ़रमाए और इनके बच्चे और पति को भी जमाअत के साथ निष्ठा एंव श्रद्धा में बढ़ाता चला जाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar Ayyadahullhu Ta'la 02.01.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....
.....
.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*